P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

भारत – जापान से आगे मोदी और अबे ! एक विश्लेषण

दीपक कुमार सिंह
पूर्व शोधछात्र,
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारत जापान संबंधों में आए ऐतिहासिक बदलाव को रेखांकित करता है। प्रारंभ से ही भारत जापान संबंधों में एक विशेष प्रकार की निरंतरता थी किंतु हाल ही में नई सरकार आने से अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। फलतः नए सिरे से संबंधों में बदलाव लाए गये पूर्व में चले आ रहे समिति स्तरीय वार्ताओं को आगे बढ़ा कर संस्थागत संबंधों का और फिर व्यक्तिगत संबंधों का नवीन कलेवर दिया गया जिसके बाद दोनों देशों के बीच के संबंध उनके नेतृत्वकर्ता नेताओं के बीच संबंधों द्वारा प्रभावित माना जाने लगा है। सहोद का उद्देश्य यह देखना है कि शिंजो अबे और मोदी के बिच अच्छे वैचारिक ताल्लुकात उनके देशों के बीच संबंधो और उनकी बाधाओं पर क्या प्रभाव डालते है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

मुख्य शब्द : विश्लेषण, विदेश नीति, प्रजातांत्रिक व्यवस्थाए अंतरराष्ट्रीय स्तर

प्रस्तावना

केंद्र में सत्ता के बदलाव से आये स्वभाविक बदलावों में से एक भारत कि विदेश नीति में व्यापक परिवर्तन दिखता है। यही बदलाव भारत और जापान संबंधो में भी महसूस किया गया इसके पीछे दोनों नेताओ कि गाढ़ी मित्रता भी मानी जाती है। दोनों नेताओ की विचारधारा और कार्यशैली में समानता दिखती है जैसे– नर्म राष्ट्रवाद, बाजार उन्मुख अर्थव्यवस्थ, सक्रिय विदेश नीति और एशियवाद की नीति और एक जैसी प्रजातांत्रिक व्यवस्था इन्हें और करीब लाती है। भारत और जापान एक स्वाभाविक मित्र है जबकि मित्रता में संभावनाओं का उचित दोहन अभी भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं किया जा सका है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिथिलता के लिए भारत की प्रारंभिक नीतियां जैसे गुट निरपेक्षता आदि जिम्मेदार थे। किंतु जब से नरेंद्र मोदी सरकार सत्ता में आई है भारत जापान संबंधों में शिंजो अबे और नरेंद्र मोदी के बीच गैर पारम्परिक राजनयिक संबंधों के नवीन अध्याय का उदय हुआ है। जिसमें व्यक्तिगत संबंधों की प्रगाढ़ता के कारन देशों के बीच सम्बन्धो में नये अवसरों का सृजन हुआ है। जो वर्तमान प्रधान मंत्री की स्वभाविक कार्य शैली है। जिसके फलस्वरूप विदेश नीति में व्यापक बदलाव देखने को मिला है। आज इन दोनों नेताओं की प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं उनके स्पस्ट नेतृत्व को केंद्र में रखकर के भारत जापान अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरुप दोनों देश पिछले कुछ वर्षों में संबंधों की नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है। लेकिन ऐसे संबंधों के कुछ स्याह पहलू भी है जिनको ध्यान में रखना अति आवश्यक है। आजादी से लेकर अब तक भारत जापान संबंध में एक विशेष प्रकार की निरंतरता थी चाहे वह नेहरू की नीति हो और बाद में मिली जुली सरकारों द्वारा भी उसी रास्तों पर चलना किन्तु हाल में आये बदलावों को स्पस्ट देखा जा सकता है। भारत जापान के बीच इन स्वाभाविक रिश्तो की कई वजह है। जैसे कि प्रजातान्त्रिक व्यवस्था, चीन जैसे पडोसी और उसी से लगातार विवाद की स्थिति बने रहना अथवा दक्षिण चीन सागर में अंतर्राष्ट्रीय चिंताओं पर एकमत या फिर सुरक्षा परिषद में सुधार एवं मजबूत दावेदारी एवं हिन्द प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा इत्यादि। भारत जापान संबंधों में शिक्षा, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष विज्ञान, विज्ञान और तकनीकी, पर्यावरण और सांस्कृतिक संबंधों में व्यापक सुधार देखने का मिला जिसका प्रभाव मुख्य रूप से आर्थिक भागीदारी, रक्षा भागीदारी, समुद्री सुरक्षा, क्षेत्रीय सुरक्षा एवं भागीदारी, संरचनात्मक विकास आज ऐसे क्षेत्र हैं जहां भारत जापान सकारत्म संबंध का महत्तम प्रभाव दिखता है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत और जापान में आई नई सरकारों के मध्य राजनैतिक एवं कुटनीतिक संबंधों को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्यन करना और इन संबंधो के माध्यम से भारत जापान रिश्ते को नई दिशा देना।

समयावधि – 6 माह

साहित्यालोकन

अंतर्राष्ट्रीय संबंध एक ऐसा विषय है जहाँ उपलब्ध साहित्य में निरंतर परिवर्तन ही इस क्षेत्र की विशेषता है। भारत जापान के संबंधों में आए बदलाव का वर्तमान और भविष्य की रणनीति सहयोग, संबंध, व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय जगत पर पड़ने वाले प्रभाव को सम्मिलित करना आवश्यक है अतरू प्रस्तुत शोध पत्र भारत जापान के संबंधों के बीच आए नवीन दृष्टिकोण एवं संभावनों के दृष्टिगत आए बदलाव को रेखांकित करता है और भविष्य पर उनके प्रभाव का आकलन करता है।

मोदी और अबे के संबंधों में आयी तेजी से जापानी निवेशकर्ताओं ने भारत में निवेश के लिए गहरी रुचि दिखाया था। सामान्यतः इसका कारण सेनकाकूध्‍ डियायू द्वीपों पर चीन और जापान के संबंधों में तनाव आना था। जैसे कि 2010 में जापान बैंक ऑफ इंटरनेशनल कारपोरेशन (श्रठप्ब्) द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट यह बताती है कि लगभग 600 जापानी उत्पादन कंपनियों में से दो तिहाई ने इंडिया को निवेश के लिए बेहतर जगह माना। एक और रिपोर्ट में श्रठप्ब् ने कहा कि इंडिया 1992 के बाद पहली बार 2014 –15 और 16 में जापान बैंक द्वारा निवेश के लिए सबसे बेहतरीन विदेशी क्षेत्रध् देश घोषित किया भारत जापान के बीच के संबंधों में नई ऊंचाइयों तब आई जब वह 2014–15 से बढाकर 2015–16 में यह निवेश 4.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर की नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया जो कि पहले की तुलना में लगभग 2 गुना ज्यादा है। हाल ही में जापानी निवेश में और विविधता आई अब वह खुदरा, कपड़ा, उपभोक्ता वस्तुएं, खाद्य एवं पेय, बैंकिंग आदि क्षेत्रों में भी निवेश करना शुरू कर दिया है। शिंजो अबे ने मोदी की मेक इन इंडिया प्रोग्राम में 12 बिलियन अमेरिकी डॉलर निवेश का आश्वासन भी दिया है इसके अलावा हाल में हुए हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट को भी गहराते रिस्तों के रूप में देखा जा सकता है जिसमें भारत को वैश्विक संरचना उत्पादन और और निर्यात केंद्र के रुप में विकसित करना है। आर्थिक संबंधों की नई शुरुआत तब हुई जब जापान और चीन के बीच में सेनकाकू द्वीप को लेकर के विवाद शुरू हुआ जिसके फलस्वरूप चाइना ने जापान को दुर्लभ मृदा तत्वों का निर्यात 40ः घटा दिया किंतु भारत और जापान ने तुरंत ही दुर्लभ मृदा तत्वों की खोजबीन खुदाई उत्पादन एवं निर्यात मैं सहयोग संबंधी पत्र पर हस्ताक्षर किए जिस की आपूर्ति 2016 से शुरू कर दी गई है।

संचार और बुनियादी ढांचा

संचार और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में मोदी और अबे ने समझौता किया जिसके तहत 1200 सौ किलोमीटर की पूर्वोत्तर के 6 राज्यों को जोड़ने वाली राज्य मार्गों का निर्माण शामिल है। एशियाई विकास बैंक (।क्ठ) और जापान बैंक्स ऑफ इंटरनेशनल कारपोरेशन के द्वारा पूर्वी घाट के साथ साथ आर्थिक गाड़ियां गलियारे के निर्माण में सहयोग के लिए 1000 किलोमीटर की राजमार्ग के लिए पहले ही धन निर्गत किया जा चुका है। इस योजना का भारतीय विदेश नीति के एक्ट ईस्ट पॉलिसी की दिशा में एक प्रमुख कदम की तरह देखा जा रहा है। इसके अलावा एशियाई विकास बैंक द्वारा भारत के अल्प विकसित राज्यों के लिए जैसे उत्तर प्रदेश एवं झारखंड छत्तीसगढ़ के लिए अलग से योजनाओं का अनुदान दिया गया। शायद दो देशों के बीच में सबसे जो महत्वपूर्ण समझौता जो हुआ है वह है अंडमान निकोबार द्वीप समूह में जो कि सामरिक रुप से एक महत्वपूर्ण जगह है जिसमे जापान को उसमें बुनियादी ढांचे के विकास के लिए आमंत्रित करना और जापान द्वारा उसको स्वीकार करना शामिल है। इसके पहले इसके पहले अमेरिका सहित कई देशों के द्वारा रुचि प्रदर्शित किए जाने के बावजूद भी भारत का इनकार इस बात को दिखाता है कि भारत जापान संबंधों में जो गहराई है उसकी तुलना अन्य देशों के साथ सम्न्धो से करना मुश्किल है। अंडमान निकोबार दीप समूह पर सड़क निर्माण 15 मेगा वाट डीजल प्लांट और वहां के नेवी बेस को उच्चीकृत करना इत्यादि शामिल है। जहा से चीनी सबमरीन की गतिविधियों के ऊपर नजर रखा जा सकता है अंततः मोदी–अबे की नीतियां कद एशिया से बाहर भी देखी जा सकते हैं जैसे अफ्रीका में उनकी विकास को लेकर साझी रणनीति ऐसा करने पर भारत और जापान द्वारा हिंद प्रशांत संचार सुरक्षा और स्थायित्व और समृद्धि को केंद्र में रखकर के रणनीति तैयार किया गया है। भारत और जापान की अगुवाई में एशिया अफ्रीका विकास क्षेत्र एशिया अफ्रीका विकास गलियारा (Asia Africa Growth Corridor & AAGC) जो दक्षिणी एशिया, को दक्षिण पूर्वी एशिया, ईस्ट एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया को जोड़ता है। यह बेल्ट एंड रोड इनिसिएटिव के एक विकल्प के तौर पर देखा जा रहा है जिसका समर्थन दोनों नेताओ ने सितम्बर 2017 के सामूहिक व्यक्तव्य में दोनों देशों ने समर्थन किया है।

नाभिकीय ऊर्जा

नाभिकीय ऊर्जा संभवता अबे और मोदी के बीच के संबंधों का सबसे बेहतरीन परिणाम नाभिकीय ऊर्जा सहयोग के क्षेत्रों में देखा जा सकता है जो नाभिकीय ऊर्जा के शांतिपूर्वक उपयोग को लेकर के किया गया है। वैसे तो यह सहयोग 2010 में मनमोहन सिंह के दौरान के हाल ही में किया गया किंतु बीच में ही ठन्डे बसते में चला गया था जिसको इन दोनों नेताओ के प्रयासों द्वारा ही पुनर्जीवित किया गया। इसमें नई ऊर्जा का संचार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिसंबर 2016 के जापान यात्रा के दौरान मिली और यह अगस्त 2017 में लागू हो गया। यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारत एकमात्र ऐसा देश है जो बिना परमाणु अप्रसार संधि का सदस्य होते हुए भी जापान से ऐसा समझौता करने में कामयाब हुआ। इस उपलब्धि को कमतर नहीं आंका जा सकता है। हालाकी इसके बाद अभी कुछ और चुनौतियां सामने आई हैं जिनको सुलझा लेने का आश्वासन दोनों देशों के द्वारा किया गया है।

रक्षा एवं सुरक्षा

2016 में भारत जापान ने दो रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किए जो इंडियन एयर फोर्स और जापान के एयर सेल्फ डिफेंस फोर्स के बीच हुआ है। जिसमे पहला डिफेन्स फ्रेमवर्क अग्रीमेंट (क्मिदेम थ्तंउमूवता

।हतममउमदजे) था जिसका सम्बन्ध रक्षा उपकरणों, संचार सुरक्षा उपायों और तकनिकी हस्तानांतरण और दूसरा समझौता एयर स्टाफ टॉक '।पत ेजंिि ज्ंसो – 2016' का उद्घाटन है। पूर्व में मोदी और अबे द्वारा रक्षा सहयोग में बढ़ावा न देने की नीति का पालन किया गया किंतु 2016 में और सितंबर 2017 में दोनों नेताओं के बीच में हुई द्विपक्षीय वार्ता के बाद पहली बार रक्षा उद्योग समूहों की टोक्यो में मीटिंग हुयी जिसमें शीर्ष संस्थाओं ने (Acquisition] Technology and Logistic Agency (ATLA) and the Department of Defence Production (DDP) भी भाग लिया जिसमें वार्ता हुई कि दोनों देशों की रक्षा कंपनियों और वायु सेना में संबंधों की बढ़ोतरी करना शामिल है। दोनों देशों की वायु सेनाओं द्वारा आतंकवाद निरोध युद्धभ्याश 2018 में किया जाना है जिसका उद्देश्य भारतीय प्रशांत क्षेत्र में स्थायित्व और समृद्धि है। मोदी और आबे द्वारा सुरक्षा का एक त्रिकोणीय समझौता किया गया जिसको बाद में चतुष्कोणीय बनाया गया और ऑस्ट्रेलिया को शामिल कर लिया गया। उदाहरण के तौर पर जून 2015 में इंडिया–ऑस्ट्रेलिया और जापान पहली बार उच्च स्तरीय वार्ता में शामिल हुए यहां पर विशेष उल्लेखनीय चतुष्कोणीय रणनीतिक साझेदारी का उदय होना जिसमें जापान इंडिया ऑस्ट्रेलिया अमेरिका शामिल है। इस रणनीति का प्रथम उल्लेख अबे द्वारा अपने प्रथम कार्यकाल के दौरान ही मनमोहन सिंह ने और केविन रूट से साझा किया था। वस्तुतः भारत और जापान को एक जैसी विचारधारा और मनरूस्थिति वाले देशों के रूप में भी देखा जाता है प्रजातांत्रिक देशों द्वारा थर्ड वेव का सामना करने और भारतीय महासागर में प्रजातांत्रिक मूल्यों को न सम्हाल पाने वाले देशों यथा म्यांमार मालदीव अदि ने भारत और जापान के समक्ष चिंता की स्थिति उत्पन्न कर दी है। प्रयास स्वरूप दोनों देशों द्वारा एशिया में प्रजातंत्र एवं साझी संस्कृति संगोष्ठी का अगुवाई किया और इसे आगे रख लेने में महत्वपूर्ण भागीदारी का आश्वासन दिया जापान और भारत ने बार–बार क्षेत्रीय समझौतों का सम्मान करने एवं एक दूसरे के भूभाग एवं सीमाओं का सम्मान करने और किसी भी विवाद कि स्थिति में उसके शांतिपूर्वक हल निकालने और युन्क्लोस (न्छब्स्ै) का सम्मान करने का आग्रह किया है। जापान और इंडिया द्वारा चीन को दक्षिण चीन सागर में आए महासागरीय कानून के अंतर्गत निर्णय के सम्मान करने का आग्रह किया गया। जो इन दोनों को एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करते है।

समुद्री सुरक्षा एवं आतंकवाद इस समय की बढ़ती चुनौतियों में से एक है जिस पर दोनों देशों के प्रमुखों किए कराए भारतीय भारतीय महाद्वीप एवं सागर में समुद्री डाकू के खतरे एवं आतंकवाद की बढ़ती चुनौतियों के बीच में दोनों देशों के बीच में सहयोग एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर है दिसंबर 2015 में दोनों देशों के द्वारा संयुक्त बयान जारी करके भारत और अमेरिका द्वारा मालाबार युद्धाभ्यास नियमित रूप से किया गया जिसका उद्देश्य मुख्य रूप से चीन कि दक्षिण चीन सागर कि गतिविधियों को केंद्र में रखकर किया गया है इसी क्रम में भारत और जापान के द्वारा जिमेक्स (श्रप्डम्) में एक्सरसाइज करना उनके संबंधों एवं सुरक्षा संबंधी चिंताओं के फलस्वरूप ही मोदी और अभी ने व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा दक्षिण पूर्व एशिया देशों में सहयोग को बढ़ावा दिया है वियतनाम नौसेना को सोवियत निर्मित युद्धपोत प्रदान करना दोनों देशों की समुद्री लुटेरो आतंकवाद इन्टरनेट सिक्यूरिटी इत्यादि पर समझौतों पर सहमत एवं हस्ताक्षर किये इन सब के अलावा सहयोग एवं वार्ताओं में वियतनाम वियतनाम फिलीपींस और सिंगापुर इंडोनेशिया मलेशिया को भी शामिल करना जिसका सकारत्मक परिणाम रहा। हाल ही में जापान के विदेश मंत्री द्वारा 500 मिलियन का सुरक्षा सहायता कोष भारतीय प्रशांत समुद्री क्षेत्र के लिए उपलब्ध करवाना एक सकारात्मक सहयोग था।

सहयोग की सीमाएं एवं चुनौतियां

मोदी और अबे के अच्छे संबंधों के बावजूद तमाम चुनौतियां अभी भी कायम है। जिनका समाधान समय रहते करना आवश्यक है। जैसे की दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2015–16 में 14.51 बिलियन डालर था जो कि पिछली बार से 6.47ः कम था। व्यापार अभी सुस्त प्रतीत होता है। भारत जापान के बीच हस्ताक्षर किए गए बवउचतमीमदेपअम मबवदवउपब चंतजदमतेीपच ंहतममउमदज व्यापार के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने में असमर्थ है अगर जापान की चीन से व्यापारिक तुलना की जाए तो पिछले दसक से भारत में लगभग 1305 कंपनियां काम कर रही हैं। अगर विशुद्ध संख्याओं की बात करें तो यह चीन में कार्यरत कंपनियों की आठवां हिस्सा ही मात्र है। एक अन्य प्रकार की समस्या यह है कि भारत और जापान संबंधों को चीनी प्रतिक्रिया के स्वरूप उत्पन्न स्थितियों के कारण बने संबंधों की तरह देखा जाना गलत है। चीन को संतुलित करने के लिए भारत और जापान का सहयोग एवं साझेदारी आर्थिक राजनीतिक एवं रणनीति का स्तर पर आवश्यक है। किंतु इसका अर्थ कदापि नहीं लगाया जाना चाहिए की चीन बराबर इंडिया और जापान क्योंकि दो देशों के बीच में संबंध कितने ही अछे क्यों न हो किन्तु सम्बन्धो जटिलता उनको एक देश की नीति जैसा व्यवहार करने से रोकती है। इसलिए इन संबंधों की अपनी सीमाएं हैं जिसके पार इस पर विचार करना संभव नहीं है। उदाहरण के तौर पर भारत जापान कई मुद्दों के लेकर साझा विचार रखते हैं जैसे– संप्रभुता, प्रक्रिया एवं नेतृत्व।

जब बात चीन द्वारा समर्थित मल्टी बिलियन प्रोग्राम बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का आता है तो इसके माध्यम से चीन अपनी उपस्थिति दक्षिण एशियाई क्षेत्र में बढ़ाना चाहता है। इसके प्रभाव में आकर के पाकिस्तान श्रीलंका म्यांमार बांग्लादेश में निवेश बढ़ाना और उन्हें मुंह मांगी सहायता उपलब्ध करवाना आदि बनता है भारत जापान संबंधों एक और खामी इनके रचनात्मक संबंधों को जमीन पर ना उतर पाना है जैसे अमेरिका की उपस्थिति यहा से कम होना और अमेरिका को इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में रोके न रख पाना बाधा है चाइना से संतुलन यु. एस. की उपस्थिति के बिना संभव नहीं है। इंडिया चाइना की अगुवाई में एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक में शामिल है। जिसका सीधे प्रतिद्वंदिता जापान समर्थित एशियाई विकास बैंक से है। इन हितों के टकराव वाले मुद्दों से

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

भारत और जापान के संबंधों के बीच चुनौतियों के रूप में देखा जा सकता है। चीन द्वारा दक्षिण एशियाई क्षेत्रों के विकास कार्यों में किये जा रहे निवेश की तुलना भारत अपनी सीमित अर्थव्यवस्था द्वारा किए जा रहे विकास कार्यों से नहीं कर सकता है। जापान द्वारा प्रस्तावित अंडमान निकोबार आइसलैंड में कार्य अभी केवल कागजों तक ही सीमित है। उसके यथार्थ में उतरने में अभी कई तकनीकी बाधाएं हैं जिनको समय रहते सुलझा लेना आवश्यक है। जापान द्वारा प्रस्तावित बिग बी प्रोजेक्ट बांग्लादेश में उसकी दक्षिण एशियाई राजनीति का हिस्सा है जो ऊर्जा संचार और निवेश जैसे क्षेत्रों में केंद्रित है इसका सीधा लाभ भारत को नार्थ ईस्ट और चेन्नई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के रूप में मिलता है। भारत और जापान एक दूसरे के भू–भाग में चीन के दखल का मुखर एवं स्पष्ट विरोध करने से अभी तक बचते आ रहे थे। डोकलाम के त्रिकोणीय जंक्शन पर और अक्साई चिन क्षेत्र पर जम्मू–कश्मीर क्षेत्र सीमा विवाद है जबकि जापान से सेनकाकू द्वीप और ईस्ट चाइना सी पर विवाद है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मोदी और अबे बार–बार अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन करने का आह्वान किया है और उसको पालन करने की अपनी प्रतिबद्धता भी जाहिर की है जापान हमेशा से अक्साईचिन के मुद्दे पर बात करने से बचता रहा है किंतु हाल ही में डोकलाम बॉर्डर पर विरोध जताने वाले देशो में जापान अग्रणी था भौगोलिक संपर्क न होना एक अलग मुद्दा है जो दोनों के बीच में बाधाओं सा काम करता है भारत और जापान चाइना के द्वारा अलग है। चीन का एक जिम्मेदार राष्ट्र न होना भी एक संशय है दोनों के लिए चीन द्वारा एक तरफ पाकिस्तान और नार्थ कोरिया को समर्थन देना इन टूटे हुए राज्यों को भारत और जापान के खिलाफ समर्थन देना और हथियार की तरह इस्तेमाल करना चीन कि सामरिक नीति का हिस्सा है जो इन देशों का मनोबल को बढ़ाने का काम करता है। न्युक्लियर एनर्जी और हथियारों तक इन देशों की पहुंच भारत और जापान के लिए एक सीधा खतरा उत्पन्न करते हैं। भारत जापान के द्वारा नाभिकीय ऊर्जा का शांति पूर्वक उपयोग भी तोशिबा और वेस्टिंगहाउस कंपनियों के बीच में फंसा हुआ है जो भारत जापान और अमेरिका के संयुक्त प्रयासों द्वारा ही समाधान किया जा सकता है। जुलाई 2017 में भारत और जापान के साथ वार्ताओं के अनुमोदित होने की संख्या भी महज एक तिहाई ही है जो इन दोनों देशों के बीच में अच्छे संबंधों को नहीं दर्शाता है। आगे की अनुमोदन की नीतियां बदली और इसमें अब पर्याप्त विकास हुआ है। इंडिया एक वृहद संभावना एवं स्रोतों वाला देश है जापान की स्थानीय राजनीति एवं मोदी को आगामी चुनाव के मद्देनजर व्यस्तता इनके रिश्तो को और आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे यदि यह इन परिस्थितियों से आगे निकल पाने में सफल होते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार से भारत और जापान संबंध में मोदी और आबे की व्यक्तिगत नीतियों ने इनमें व्याप्त बाधाओं को कम करने का सराहनीय प्रयास किया है किंतु यह संभावनाओं एवं अपेक्षाओं से बहुत कम है। जरूरत है दोनों देशों के नेताओं के साथ साथ दोनों देशों के आर्थिक एवं सामाजिक नजदीकियों को बढ़ाने का जिससे उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाया जा सके और एक मजबूत और सशक्त भागीदार वैश्विक पटल पर बन कर उभरे जो कि व्यक्तिगत सुरक्षा एवं वैश्विक सुरक्षा चिंतन एवं बाधाओं का सामना करने में सक्षम हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Agrawal H- O- {International Law and Humane Rights] central law publication] 2009-*
2. *Brownlie Ian] Basic Document in International Law] OUP] 1967*
3. *Hungligton Samuel P] Journal of democracy*
4. *Kesavn K V] when modi meets abbey-*
5. *भारत जापान सम्बन्ध पर विशेष सामरिक और वैश्विक भागीदारी के लिए टोक्यो घोषणा पत्र पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार 1 जून 2014*
6. *चुने हुए समाचार पत्रों के सम्पादकीय एवं ऑनलाइन संस्करणों जैसे– The Hindu] Indian EÛpress]The Wire] Jansatta] Dainik Jagaran] The Hindustan Times] Economic Times] India Today-*
7. *JBIC reports of 2014] 2015 and 2016-*
8. *Reports of ministry of foreign affaires-*
9. *Isda*
10. *PIB newsletter-*
11. *Observer Reaserch Fondation-*